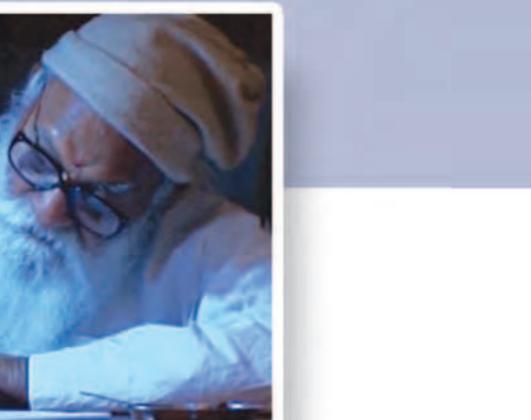


## नानाजी की पाती युवाओं के नाम



“भारतीय जनता पार्टी” के नाम से कार्य करने का निर्णय लिया। 1980 में गुम्बई में ‘‘भारतीय जनता पार्टी’’ का प्रथम अधिवेशन हुआ। उसमें दीनदयाल जी के “एकलगानव दर्शन” को तिलाजली दी गई। आवादी समाजवाद का दर्शन अपनाया गया। इस पर संघ-बैठक ने कोई आपत्ति नहीं की। परिणामस्वरूप, “भारतीय जनता पार्टी” अन्य दलों के समान एक और सत्ता-पिपासु पार्टी अस्तित्व में आई।

11 फरवरी, 1968 की प्रातः मुगलसराय स्टेशन की रेल एटरियों से सदा पड़ा दीनदयाल जी का शव पाया गया। सयोगवश, परमपूज्य गुरु जी उस समय बनासपत्र में ही थे। वे पोस्टमार्टन के स्थान पर दीनदयाल जी के शव का अंतिम-दर्शन करने पहुंचे। प. पू. गुरु जी दीनदयाल जी को बहुत मानते थे। उनके मुह से अनायास शब्द निकल पड़े, “तुम तो बही रहे, तुम्हारे ‘एकलगानव दर्शन’ का रक्षा होगा?” प. पू. गुरु जी के ये शब्द मेरे भ्रतःकरण को सदा चुभते रहते हैं।

संघ-कार्य से लगभग प्रारंभ से जुड़े गा. बाबासाहेब आर्टे परमपूज्य डॉक्टर जी के साथ छाया के समान लूँडे हुए थे। प. पू. डॉक्टर जी की आकांक्षाओं को साकार करना मा. आर्टे जी का जीवन-द्रव था। अपने देशव्यापी समाज को अपना परिवार मानकर तदनुसार संघ स्वयंसेवक अपनी जीवन-रचना करें, यह प. पू. डॉक्टर जी की आकांक्षा थी। संघ-कार्य की इस विशेषता को गा. आर्टे जी ने आल्मसात कर लिया था।

1946 के 16 अगस्त को मुस्लिम लीग ने कलकत्ता से अपना ‘‘उत्तरेकट एक्शन’’ प्रारंभ कर हिन्दुओं का कल्पेश्वर किया था। देश भर में हिन्दू-मुस्लिम दंडे भड़क उठे थे। सयोगवश, उन्हीं दिनों गा. आर्टे जी अपने प्रवास के कार्यक्रम के अनुसार गोरखपुर पहुंचे थे। मैं उस

समय गोरखपुर विभाग का संघ-प्रचारक था। गोरखपुर में संघ की शाखाएं बहुत अच्छी थीं। नगर की 6 शाखाओं में एक हजार से अधिक देविक उत्तिष्ठति रहती थी। अधिकांश संख्या तरलों की ही होती थी।

गोरखपुर में मुस्लिम आवादी काफी थी। भ्रतः गोरखपुर में दंडे की आशंका से लोग भयभीत थे। शहर के एढे-लिखे और प्रतिष्ठित लोग 40-50 की संख्या में भ्र. आर्टे जी से आग्रह किया था कि वे संघ द्वारा हिन्दुओं की रक्षा करने का दायित्व संभालें।

गा. आर्टे जी ने इन लोगों से कहा, “आपकी यह अपेक्षा स्वाभाविक है। किन्तु संघ यह दायित्व स्वीकार नहीं करता। यह आपका संघ यह दायित्व स्वीकार नहीं करेगा तो आपके हिन्दू-संगठन की आवश्यकता ही क्या है?” इसी अर्थ के तर्क अन्य लोगों ने भी प्रकट किया।

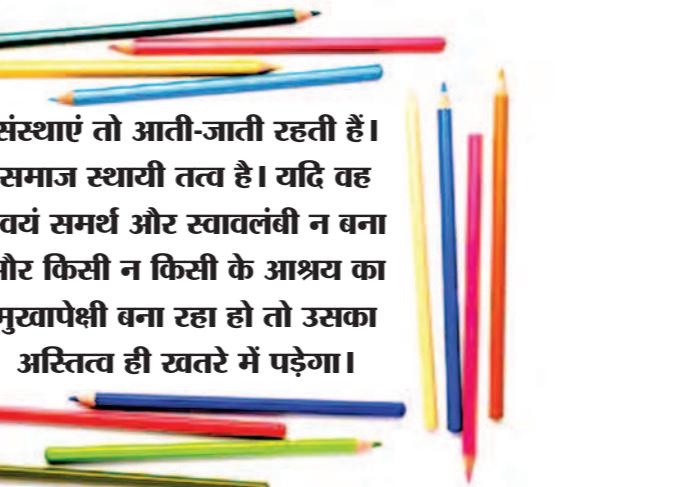
गा. आर्टे जी ने इन लोगों से प्रार्थना की, “आप कृपया शांति से संघ की भूमिका समझने का प्रयास करें। प. पू. डॉक्टर जी ने सब प्रकार के अनुभवों के बाद संघ की नीति-नियतिरित की है। अभी तक हिन्दुओं की सुरक्षा एवं उत्थान का दायित्व कोई न लोई संस्था निभाने के लिए सामग्रे आती रही। समाज स्वयं असंगठित और निर्वल बना रहता था। संस्थाएं तो आती-जाती रहती हैं। समाज स्वयं समर्थ और स्वावलम्बी बना रहता रहते रहे हैं। यदि वह संघ संघर्ष के नाम से अभियान लेता रहता तो उसका अर्थित होना चाहिए।

गा. आर्टे जी के विचारों से सब सहमत हुए। सबने तय किया कि वे नगर के सभी मोहल्लों में गा. आर्टे जी की सताह के अनुसार सिद्धाता करें। फलस्वरूप, गोरखपुर दंडे से पूर्णतः वच गया था।

50 साल के अनुभव के बाद यह सिद्ध हुआ है कि गा. आर्टे जी का वितन वास्तविकता की क्षेत्री न बना और फिसी न फिसी के अप्रय का मुख्यालयी बना रहा तो उसका अरित्व ही खतरे में पड़ा।

संघ हिन्दू समाज को समर्थ एवं स्वावलम्बी बनाना चाहता है। संघ हिन्दू समाज के संरक्षण का श्रेय लेकर वाहवाही लूटना नहीं चाहता।

आप सब हिन्दुओं के नामे समाज की सुरक्षा



**संस्थाएं तो आती-जाती रहती हैं। समाज स्थायी तत्व है। यदि वह स्वयं समर्थ और स्वावलम्बी न बना रहा हो तो उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ेगा।**

करने के लिए स्वयं सिद्ध हों, तो संघ के स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के नामे नहीं, अपितु हिन्दू होने के नामे हर प्रकार के संकट में सबसे आगे दिखाई देंगे।

गा. आर्टे जी के विचारों से सब सहमत हुए। सबने तय किया कि वे नगर के सभी मोहल्लों में गा. आर्टे जी की सताह के अनुसार सिद्धाता करें। फलस्वरूप, गोरखपुर दंडे से पूर्णतः वच गया था।

संघ की इस घटना ने मेरे अंतःकरण पर संघ के नर्म की अग्रिम छाप छोड़ी है।

गा. आर्टे जी संघ-कार्य को संकुचित दायरे में जकड़ना नहीं चाहते थे। प.पू. डॉक्टर जी की आकांक्षा के अनुसार संपूर्ण समाज को अपना परिवार मानने की अवधारणा को व्यावहारिक धारातल पर साकार करना ही संघ का एकमेव कार्य मानते थे।

शुभाकांशी  
नाना देशमुख  
(नाना देशमुख)

मा. आर्टे जी संघ-कार्य को संकुचित दायरे में जकड़ना नहीं चाहते थे। प.पू. डॉक्टर जी की आकांक्षा के अनुसार संपूर्ण समाज को अपना परिवार मानने की अवधारणा को व्यावहारिक धारातल पर साकार करना ही संघ का एकमेव कार्य मानते थे।

एकमेव कार्य मानते थे।